International Journal of Applied Research 2015; 1(6): 294-296

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(6): 294-296
www.allresearchjournal.com
Received: 01-04-2015
Accepted: 01-05-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

ज्योति शर्मा
हिंदी प्राध्यापक स्वामी विवेकानन्द महाविदयालय चिंतपूर्णी हिप्र

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

नारी सम्मान अतीत और वर्तमान

डॉ0 शिवदत्त शर्मा, ज्योति शर्मा

ष्नारी संवेदना और चेतना का स्वरुप है जो कि समयानुसार परिवर्तित होता है। नारी धरती के समान है जो उसकी तरह संसार को रस, प्राण और जीवन प्रदान करती है। नारी का पवित्र सौंदर्य और धरती का आलौकिक सौंदर्य, दोनों ही आकर्षित करते हैं।
" महादेवी वर्मा " के अनुसार " नारी में सौंदर्य, सौंदर्य में प्रेम, प्रेम में अनन्यता, और अनन्यता में आनंद है। आनंद नारी में है। वह भी शक्ति है, चिति है। उसकी मुस्कान में सृजन, उसके दूध में स्थिति, और उसकी आह में प्रलय छिपा है। वह मान्या है, पूज्या है, आराध्या है। उसके मोह में स्नेह, बंधन में दान और जीवन में उत्सर्ग है। वह देवी है, वह शक्ति है, श्रद्धा है, वह हृदय है, अनुभूति है। अनुभूति की अभिव्यक्ति कभी–कभी असंभव हो जाती है, इसलिए नारी रहस्यमयी है।"[1] प्रत्येक सुखी एवं समृद्ध परिवार के पीछे नारी की कठोर मेहनत और असीम त्याग होता है। नारी की इसी महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखकर ही हमारे पूर्वजों ने नारी को दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी के रुप में पूजा है। वह परिवार, समाज, देश, राष्ट्र के भविष्य की सूत्रधारिणी है। आज वह पुरुष से आगे है।

नारी संवेदना

भारतीय नारी की संवेदना प्रायः सम्पूर्ण हिंदी साहित्य में उभरकर सामने आती है। महादेवी वर्मा ने नारी की संवेदना का बहुत ही सुंदर चित्र अपनी प्रसिद्ध कविता में दुःख की बदली के रुप में चित्रित किया है तो उषा प्रियंवदा की कहानियाँ नारी संवेदना का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करती हैं।
मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में नारी के शोषण एवं अपमानजनक रुपकों से नारी की दयनीय स्थिति स्वयं प्रमाण के रुप में प्रतिलक्षित होती है। मैथिलीशरण गुप्त द्वारा नारी का अबला सम्बोधन इसी नारी की पीड़ा का प्रतीक है।[2] नारी कन्या से लेकर पत्नी एवं माँ सभी चरित्रों में षोषित एवं अप्रतिष्ठित रही है, उसे अबला समझकर एक तरह से दूसरे दर्जे का मनुष्य मानकर उसका शोषण करने की प्रथा निरन्तर चल रही है, चाहे उसमें कुछ परिवर्तन वर्तमान समाज में दिखाई देता है।
नारी को भोग्या, आनन्द–प्रमोद की वस्तु मानकर शताब्दियों से शोषण होता आ रहा है।[3] उसके मन की व्यथा– कथा जैनेन्द [4] एवं उषा प्रियंवदा के अतिरिक्त आचार्य चतुरसेन के प्रसिद्ध उपन्यास " वैशाली की नगर वधु " में आम्रपाली के रुप में देखा जा सकता है। ऐसी नारी जो अनिन्द्य सौन्दर्य की स्वामिनी होकर भी अभिषप्त सी है, जिसे केवल इसीलिए ही नगरवासियों की बधु बनने पर मजबूर कर दिया जाता है क्योंकि व अत्यन्त लावण्यमयी एवं सुन्दर है।[5] उसके अपने स्वपनों का संसार नहीं है, सब कुछ समाज के ठेकेदार पुरुषों के अधिकार में है। कैसी बिड़म्बना है! किया गया है।
नारी की स्थिति भिन्न–भिन्न कालों में भिन्न रही हैः–

प्रागैतिहासिक या पाषाणकाल में नारी का मातृ रुप ही विषेष उल्लेखनीय था। उसकी स्थिति पुरुष से श्रेष्ठ थी। समाज में स्त्री का अधिकार सर्वोपरि था क्योंकि उस समय स्त्री–पुरुष के बीच संबंध स्वच्छंद थे। हमारे यहाँ नारी को मातृशक्ति रुप में पूजा गया। उस समय विवाह की कोई रस्म नहीं थी।

वैदिक काल में नारी को भारतीय समाज और साहित्य में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त था। [6] इस काल में नारी को देवी रुप में पूजा जाता था। देवी सरस्वती को ज्ञान और विद्या की देवी स्वीकार किया गया तो लक्ष्मी को धन–धान्य देने वाली माना गया। दुर्गा की प्रतिष्ठा शक्ति रुप में हुई [7] और उसे धरती की साक्षात् अन्नपूर्णा स्वीकार किया गया। जीवन में जो कुछ भी सुंदर था, कोमल था, उपयोगी था, और जीवनदायी था, उसकी कल्पना हमारे यहाँ नारी रुप में की गई। घर परिवार चलाने वाली से लेकर, वैदिक युग में करवाए जाने वाले हवन–पूजन जैसे महान कार्यों में पति की सहचरी थी। [8]

ऋग्वेद काल में गार्गी, मैत्रेयी, सावित्री और देवयानि [9] ऐसी नारियाँ थीं जो ऋषियों के साथ शास्त्रार्थ कर सकती थीं, भारत में लीलावती जैसी गणितज्ञा महिला हुई जिसने दशमलव प्रणाली को विकसित किया।

" श्याम व्यास " ने इस युग की नारी की अच्छी स्थिति इस प्रकार व्यक्त की है– " नारी के विकास एवं अधिकार की दृष्टि से वैदिक युग का इतिहास भारतीय नारी का स्वर्णकाल हैं[1] [10] **उत्तरवैदिक काल** में नारी के अपने व्यक्तित्व, आदर्श और लक्ष्य हमेशा के लिए पुरुष के चरणों पर कुंठित हो गए। वर्ण व्यवस्था के कारण वह पुरुष से अलग होने लगी। इस युग में उसका मूल्य एक चल संपति जितना ही रह गया। शल्य उसे बहन के रुप में बेच सकता है, गांधार नरेश द्रव्य के लोभ से उसे किसी नेत्रहीन की पत्नी बनने को मजबूर कर सकता है, पांडु जैसा पुरुषत्व हीन पति की आज्ञा से वह दुराचार करने को विवश हो सकती है,[11] भीम उसका अपने भाइयों के लिए अपहरण कर सकता हे, भाइयों की सहमति से वह पाँच पतियों की सहभोग्या बन सकती है, [12] आवश्यकता पड़ने पर उसे दांव पर लगाया जा सकता है। आगे चलकर कामवृति निंदा के साथ, नारी निंदा, बहु–विवाह, बाल–विवाह, अशिक्षा, पर्दा प्रथा आदि के प्रचलन से नारी एक मृत यंत्र की तरह हो गई। पुरुष उसे मनोरंजन और वंश वृद्धि का साधन मात्र समझने लगा।

महाकाव्य काल में नारी का सम्मान कम होता चला गया। इस युग में बाल–विवाह, बहुपत्नी विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया जिससे नारी का तिरस्कार हुआ। रामायण युग में धोबी संदेह पर सीता को वनवास,

रावण द्वारा सीता का हरण, बलि द्वारा अपने छोटे भाई की पत्नी को अपने घर में रखना। [13] इससे यह नारी के समाज में गिरते स्थान का अनुमान लगाया जा सकता है। महाभारत काल में भी कुंती ने जिस प्रकार द्रौपदी को पाँचों भाइयों की पत्नी बना दिया। पांचाली (द्रौपदी) को जुए के दांव पर लगाना, दुर्योधन द्वारा उसका चीर हरण, यह नारी के गिरते स्तर के उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त इस युग में नारी के गौरव के कारण हैं जैसे सीता का शील, पतिव्रता धर्म की परिसीमा, कैकेयी द्वारा अपने पति का युद्ध में साथ देना, कुंती की मातृशक्ति, गांधारी में पातिव्रत्य धर्म का उत्कर्ष और द्रौपदी द्वारा अपने बजूद की रक्षा, नारी चेतना के उदाहरण हैं। [14]

बौद्धकालीन समाज में नारी की अत्यंत दयनीय स्थिति थी। उसे जीवन संगिनी नहीं बल्कि जीवन की पूर्ति का केवल उपकरण मात्र समझा जाता था। इस काल बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। उस समय दास–दासियों का क्रय–विक्रय किया जाता था। उन्हें ब्राह्मण की संपति मात्र माना जाता था। वैश्या वृति भी जोरों पर थी।

संस्कृत साहित्य की नारी प्रेयसी, पत्नी और माता है जिसने पुरुष को जीवन की पूर्णता प्रदान की लेकिन उसके सभी अधिकार पुरुष की अधीनता में ही सिद्ध थे।

आदिकाल में नारी का सम्मान कम होता चला गया। उसे मात्र भोग की वस्तु समझा जाने लगा था,

स्त्रियों का खरीदना, बेचना, उनका अपहरण कर लेना साधारण सी बात थी। सती प्रथा अपना विकराल रुप धारण कर चुकी थी। विदेशी आक्रमणों के कारण ही यहाँ पर्दा प्रथा, [15] सती प्रथा, बाल विवाह, भ्रूण हत्या जैसी अनेक कुरीतियाँ समाज को खोखला कर रहीं थीं। नारी को घर की चार दीवारी में बंद कर दिया गया।

मध्ययुग में नारी को माया का रुप माना गया, नारी को कठोर यातनाएँ दी जाने लगीं, [16] उसे साधना मार्ग में बाधक माना गया, इन बातों का प्रमाण हमें भक्ति साहित्य से मिलता है। [17]

उत्तर मध्यकाल में नारी का शरीर उसकी आत्मा से अधिक महत्वपूर्ण माना जाने लगा। इस युग में नारी को घर की रानी बनाने का प्रलोभन देकर उसे शिक्षा से वंचित कर दिया और उसकी आत्मनिर्भरता को असंभव बना दिया। उसे भोग विलास की वस्तु बनाकर धार्मिक तथा सामाजिक रुढियों में बांध दिया।

आधुनिक युग में नारी ने विकास की अनेक मंजिलें पार की हैं। आज वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर जीवन के हर क्षेत्र में राष्ट्र निर्माण के कार्य में जुटी है। कोई व्यवसाय उससे अछूता नहीं है। आज की नारी सामाजिक–धार्मिक रुढियों से मुक्त हो अपने अस्तित्व की सार्थकता समाजोपयोगी कार्यों में ढूंढ रही है।

भारतीय नारी ने अपनी महानता के कई तथ्य प्रस्तुत किए हैं। चाहे वह एवरेस्ट पर चढने वाली भारतीय महिला बछेंद्रीपाल हो या भारतीय वायुसेना की प्रथम पायलेट हरिता कौर देयोल, शरतीय प्रथम महिला मर्चेंट नेवी ऑफिसर सोनाली बैनर्जी हो या फिर भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी अथवा वीरता की प्रतिमूर्ति रानी लक्ष्मीबाई [18] या कल्पना चावला। आधुनिक नारी ने सदियों के इतिहास को बदल कर रख दिया है परन्तु कुछ ऐसी नारियाँ अब भी भारत में हैं जो अनपढता, शोषण और रुढियों का शिकार हैं। उच्च वर्ग के लोग उनसे कार्य करवाते हैं और उनपर अमानवीय अत्याचार करते हैं। मध्यमवर्गीय नारी पढी–लिखी और नौकरीपेशा है। और परिवार रुपी गाड़ी को आगे चला रही है। यह राष्ट्र की महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। उच्च वर्ग की नारियाँ पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग कर अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूल रही हैं और विलासिता की ओर बढ रहीं ं।

नारी संवेदना का विश्लेषण

सारांशतः कहा जा सकता है कि विभिन्न कालों में नारी की स्थिति भिन्न–भिन्न रुप से दिखाई देती है, परन्तु एक तथ्य यह उभर कर आता है कि वैदिक काल को छोड़कर प्रायः सभी कालों में नारी शोषण, मनोरंजन, एवं दूसरे दर्जे के मानव के रुप में इतिहास में चित्रित दिखाई देती है, जो यथार्थ से भरपूर है।

नारी समाज के शोषण का शिकार रही, चाहे वह काल प्राक् ऐतिहासिक हो या मध्यकालीन, सभी में नारी की बुद्धि, योग्यता, मन, मस्तिष्क एवं उससे भी बढकर उसकी संवेदनाओं को कोई विषेष महत्व नहीं दिया जाता था। नारी के अधिकार पुरुष के अधिकार में थे जो समाज में वर्चस्व प्राप्त था। महादेवी वर्मा का उल्लेख नारी की आंतरिक क्षमताओं एवं व्यक्तित्व को उभारने में बिल्कुल सटीक लगता है कि नारी में सौंदर्य, सौंदर्य में प्रेम, प्रेम में अनन्यता, और अनन्यता में आनंद है। उसकी मुस्कान में वैभव दू ध में स्थिति, [19] और उसकी आह में प्रलय छिपा है।

उपन्यास " वैशाली की नगर वधु " में नगरबधु की आह में सम्पूर्ण वैशाली राज्य इसीलिए नष्ट हुआ क्योंकि उस समाज में नारी की संवेदना को समझने, पहचानने का किसी के पास अवसर नहीं था।

संदर्भ सूची

1. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ – पृ. 12 – 14
2. मैथिलीशरणगुप्त साकेत
3. महाभारत वनपर्व 13
4. पत्नी उपनयास जैनेद्र कुमार
5. वैशाली की नगरवधु आचार्य चतुरसेन 23
6. यत्रनार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता मनुस्मति अध्याय 10
7. श्री दुर्गा सप्त शती प्रथम चरित्र 117

8. उत्तर राम चरित भवभूति 45
9. वाल्मीकि रामायण अरण्यकांड 231
10. ष्याम व्यास , हिंदी महाकाव्य में नारी चित्रण, पृ. – 21
11. महाभारत महर्षि वेदव्यास116
12. उत्तर राम चरित भवभूति 67
13. राम चरित मानस तुलसीदास लंकाकांड 71
14. महाभारत महर्षि वेदव्यास 111
15. हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ. ईश्वरी प्रसाद 165
16. संत कबीर वाणी पारस नाथ तिवारी 63